ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.19, No.4, Oct. – Dec., 2024/20

भारत एवं भारतीयता

सुषमा पाठक
https://doi.org/ 10.61410/had.v19i4.207

सारांशः– हमारे देश भारत के सम्बोधन हेतु अनेक संज्ञाओं का उपयोग किया गया यथा–जम्बूद्वीप, आर्यावर्त, अजनाभ वर्ष, भारत खण्ड, भारत–वर्ष इलाव्रत, इण्डिया एवं तेनजीक। उपर्युक्त सर्वाधिक चिर्चित और अद्यतन उपयोग में संज्ञों भारत है, जिसे आंग्ल भाषा में इण्डिया कहा जाता है। आदि शासक मन अपनी प्रजा का भरण–पोषण करने के कारण 'भरत' संज्ञा से लोक प्रचलित हुये, मनु की पाँचवी पीढ़ी में स्वयं भू मनु के उपरान्त क्रमशः प्रियव्रत अग्नीध्र, नाभि और ऋषभ। ऋषभ के दो पुत्र भरत और बाहुबली हुये। बाहुबली के वैराग्य ग्रहण करने पर भरत को चक्रवर्ती सम्राट का दायित्व मिला। रामचन्द्र जी के अनुज का भी नाम 'भरत' था। इसी प्रकार पुरुवंश के शासक दुष्यंत और शकुन्तला के पुत्र का भी नाम 'भरत' था। इस प्रकार उपर्युक्त चार 'भरत' संज्ञाये 'भारत' नामकरण वश आधार रूप में चर्चित है। इलाव्रत या इलावृन्त संज्ञा भी प्रियव्रत के वंशजों में प्राप्त होती। असंदिग्ध रूप से भारत संज्ञा का घनिष्ठ सम्बन्ध 'भरत' संज्ञा से है, जो पराक्रमी, प्रजावत्सल और नीर–क्षीर विवेकी अपनी प्रजा का पोषणकर्त्ता रहा होगा।

शब्द संकेत :– जम्बूद्वीप, आर्यावर्त, तेनजीकू, भारतखण्ड, भारतवर्ष

जम्बूद्वीप– पद का उपयोग पुराण साहित्य, जैन एवं बौद्ध साहित्य में हुआ है। इसका शाब्दिक अर्थ है – जम्बू वृक्षों की भूमि/सीजीगियम क्यूमिना सामान्यतया इसका अभिप्राय बृहत्तर भारत से ग्रहण किया जाता है। **आर्यावर्त –** बौधायन (1.1.2.10) वशिष्ठ (1.8–9 एवं 12–13) एवं पतंजलि (200 ई0पू0) ने उल्लेख किया है। इसका सामान्य अभिप्राय आर्यो की भूमि है। इसका उपयोग गंगा–यमुना के दोआब से ग्रहण किया गया। कान्यकुब्ज/कन्नौज इसका केन्द्र था। **तेनजीकू –** का शाब्दिक अर्थ स्वर्ण है। भारत के लिए प्रयुक्त चीनी संज्ञा 'तियानझू' का जापानी उच्चारण है। इसका उपयोग जापानी वास्तुकला के लिए भी किया जाता है। **भारतखण्ड –** अभिप्राय भारत की भूमि है, उसका उपयोग उपमहाद्वीप के अध्ययन में किया जाता है। इसका सन्दर्भ वैदिक संहिता महाकाव्यों और पौराणिक साहित्य में हुआ है। **भारतवर्ष –** पुराणों के आधार पर जम्बूद्वीप के नौ खण्डों में से एक खण्ड जो हिमालय के दक्षिण और गंगोत्री से कन्याकुमारी तक तथा सिन्धु से ब्रह्मपुत्र तक विस्तृत है। भारत नाम का आधार ऋषभदेव पुत्र भरत/दुष्यन्त पुत्र भरत/आदि शासक मनु की भरण–पोषण विशेषता – भरत।

प्राचीनतम साहित्यिक स्मारक ऋग्वेद, वैदिक संहिता और पुराणों में भरत शब्द का उल्लेख अग्नि, प्रकाश, शक्ति, संग्राम और सूर्य के अभिप्राय में हुआ है। विष्णु–पुराण में 'भारत' और 'भारती' सन्तति का भी स्पष्ट उल्लेख हुआ है।[1] समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में जो भू–भाग है, उसे भारत और उसकी सन्तति को भारती कहा गया है।[2] विष्णु–पुराण में ही उल्लिखित है कि – देवगण निरन्तर यही गान करतें हैं, कि जिन्होंने स्वर्ग और मोक्ष के मार्ग पर चलने के लिए भारत भूमि पर जन्म लिया है, ऐसे मनुष्य देवताओं की अपेक्षाकृत अधिक भाग्यवान है। श्रीमद् भागवत में संदर्भ मिलता है कि मनुष्य तो मनुष्य देवगण भी इस भारत भूमि के आंगन में जन्म लेने के लिए लालायित रहते हैं।[3]

अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त में कदाचित इसीलिए उल्लिखित है कि भूमि हमारी माता है और हम उसकी (पुत्र) संतति है।[4] जम्बूद्वीप, आर्यावर्त, भारत खंड, हिंद, हिंदुस्तान, अल–हिन्द, ग्यांगर, फग्युर तियानझू एवं होडू आदि नाम से अभिव्यक्त भारत शब्द हमारी सांस्कृतिक पहचान है। हिन्दू और हिन्द फारसी भाषा के शब्द हैं, जो संस्कृत सिंधु से प्रयोग में आए। जब 516 ई0पू0 में डेरियस प्रथम ने सिन्धु

आचार्य एवं अध्यक्ष, समाजशास्त्र, राजा मोहन गर्ल्स पी.जी.कालेज, अयोध्या

घाटी पर विजय प्राप्त की तब सिन्धु के समकक्ष आचमेनिड हिंदूश का उपयोग निचली सिन्धु घाटी के लिए किया जाने लगा।[5] 500 ई0पू0 की डेरियस की मूर्ति पर इसका उपयोग मिस्र के आचमेनिड प्रांत के लिए किया गया।[6] प्रथम शताब्दी में हिंदूश में 'स्तान' प्रत्यय जोड़ा गया। तब यह एक स्वतंत्र देश या क्षेत्र का वाचक बन गया और ससानी सम्राट शाहपुर प्रथम के नक्शे–ए–रुस्तम शिलालेख में इसे स्पष्ट हिंदुस्तान के रूप में संदर्भित किया गया है।[7] मुगल सम्राट बाबर ने हिन्द को पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में बड़े महासागर से आवृत कहा है। अरबी भाषा में भारत के लिए 'अल–हिन्द' भाववाचक संज्ञा का उपयोग किया गया है। 11वीं शताब्दी तक यह 'भारत' पद का वाचक बन गया। 715 शताब्दी में सिन्ध के प्रथम गवर्नर मोहम्मद इब्न कासिम ने उम्मयद सिक्का प्रचलित किया था, जिस पर 'अल–हिंद' लिखित है।[8] मुगल शासक और दिल्ली के सुल्तानों ने अपने प्रभुत्व वाले दिल्ली के समीपवती भाग हेतु 'हिन्दुस्तान' संज्ञा का उपयोग किया।

हमारे देश की एक संज्ञा अजनाभवर्ष भी प्रचलित थी।[9] जैन धर्म के प्रवर्तक ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर भारत वर्ष संज्ञा लोक विश्रुत हुई जिसकी पुष्टि स्कन्द, विष्णु,[10] वायु,[11] लिंग,[12] ब्रह्म,[13] अग्नि,[14] और मार्कंडेय पुराण[15] से होती है। भारतवर्ष संज्ञा का प्राचीनतम पुरालेखिक उल्लेख हाथीगुम्फा अभिलेख में हुआ है। जम्मू द्वीप संज्ञा का उपयोग दक्षिण पूर्व एशिया के भूभागों में किया जाता था। थाईलैंड, मलेशिया, जावा, बाली साहित्य और भारत में संकल्प मंत्र में इसका उपयोग आज भी देखा जा सकता है।[16]

भारतीय साहित्य में 'भरत' संज्ञक दो शासको का उल्लेख प्राप्त होता है। प्रथम जैन धर्म के आदि प्रवर्तक ऋषभदेव के पुत्र भरत को पृथ्वी पर ज्ञान–विज्ञान आदि के प्रचार का श्रेय दिया जाता है। द्वितीय संदर्भ महाभारत के आदि पर्व में वर्णित पराक्रमी राजा दुष्यन्त और शकुंतला के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत का उल्लेख प्राप्त होता है। नाटक शास्त्र के प्रणेता भरत मुनि को भी भारत नामकरण का आधार माना जाता है। इस प्रकार भरत द्वारा शासित एवं पोषित भूभाग भारत और उसके निवासी भारती कहलाए। यह जानना आवश्यक हो जाता है कि भारत में ऐसा क्या है। जो सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है ऐसा विचार करने पर ज्ञात होता है कि भारत शब्द ही अपने में बहुत विशेषताओं को समाहित किए हुए हैं। भा का अर्थ है ज्ञान और रत का अर्थ है लगा हुआ अर्थात जहां के लोग ज्ञान या प्रकाश को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं, ऐसे भूभाग को भारत कहते हैं। इसकी संपुष्टि ऐतरेय एवं शतपथ ब्राह्मण से होती है, जिसमें अग्नि एवं वायु को भारत कहा गया है। भरत के नाम पर भारत नामकरण वाला या देश अलौकिक, विलक्षण और सुविधा संपन्न होने के कारण अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान रखता है। इन्हीं गुणों से युक्त होने के कारण इतिहासकारों ने इसे सोने की चिड़िया कह कर संबोधित किया था। भारत के निवासियों का आचार–विचार तथा उनकी सांस्कृतिक पहचान भारतीयता हो गई।

जिस समय आज अपने आप को सभ्य कहने वाले नितांत असभ्य थे, उस समय भारतवर्ष सभ्यता के उच्चतम शिखर पर आसीन था। पश्चात्य विचारक मार्टन ने लिखा है– जब नील नदी की घाटी पर तुच्छता दृष्टिपात करने वाले पिरामिडों की सृष्टि नहीं हुई थी, तब यूरोपीय सभ्यता का दीप समझे जाने वाले यूनान और रोम नितान्त असभ्य थे, तब भारतवर्ष धन और वैभव से परिपूर्ण था। यहाँ चतुर्दिक व्यवसाय विशारदों की बस्तियां बसी थी और भूमि पर उनका परिश्रम अंकित था, कारीगरों के चमत्कार पूर्ण भवनों के निर्माण की कुशलता की समानता आज सैकड़ो वर्षों की प्रकाशित सभ्यता से भी नहीं की जा सकती है भारत एवं भारतीयता अवश्य ही असाधारण रूप से महत्वपूर्ण रही होगी भारतीयता का विकास तपोवनों और आश्रमों में हुआ है, अतः इसके चिंतन पर आध्यात्मिकता की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। सभी प्राणियों के हित की कामना करना – सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः[17], एवं अतिथि देवो भव[18] भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है। पूर्वजों द्वारा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में संतुलन बनाए रखने के साथ ही यह निर्देश भी दिया गया है कि जीवन में अर्थ और काम का इस प्रकार सेवन करो कि धर्म का उल्लंघन नहीं हो। भारतीय संस्कृति में चिंतन की स्वतंत्रता को पूर्ण

मान्यता दी गई है, परन्तु भिन्न विचार वालों के प्रति सहनशीलता एवं समन्वयवादिता का आदर्श भी भारतीयता की सुन्दरतम अभिव्यक्ति है। अनेक विदेशी जातियां भारतीय संस्कृति में उसकी सहिष्णुता ग्राह्य क्षमता के कारण ही समाहित हो सकी।

भारतीय संस्कृति महा समुद्र के समान है, जिसमें अनेक नदियाँ आकर विलीन होती रही है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी कहा है, जब से सभ्यता का सूर्य उदित हुआ है, तभी से भारत के मस्तिष्क पर एकता की भावना ने अधिकार कर लिया है। यह मौलिक एकता किसी प्रकार बाहर से थोपी गई भावना नहीं है, बल्कि यह आंतरिक एकता है और यह भारत की आत्मा में समाई हुई है।

भारत एवं भारतीयता का अनुपम उदाहरण मैक्समूलर के इन विचारों में भी परिलक्षित होता है 'संपूर्ण विश्व' में समस्त प्राकृतिक साधनों से संपन्न सौंदर्य और सत्य से सजा हुआ देश मेरे विचार से भारतवर्ष ही है। यदि मुझसे पूछा जाय कि किस देश में मानव मस्तिष्क ने अपनी मुख्यतम शक्तियों को विकसित किया है? जीवन के बड़े से बड़े प्रश्नों पर विचार किया और ऐसे समाधान ढूंढ़ निकाले जिनकी ओर प्लेटो और काम्ट के दर्शन का अध्ययन करने वालों का ध्यान भी आकृष्ट होना चाहिए तो मैं भारत वर्ष की ओर संकेत करूंगा। यदि मैं स्वयं से पूछूं की किस साहित्य का आश्रय लेकर सोमेटिक, यूनानी और केवल रोमन विचारधारा में बहते हुए यूरोपीय अपने आध्यात्मिक जीवन को अधिकाधिक विकसित, सार्वभौमिक तथा उत्तम मानवीय बना सकेंगे जो जीवन के इस लोक से सम्बद्ध नहीं हो, अपितु शाश्वत और दिव्य हो तो मैं पुनः भारतवर्ष की ओर संकेत करूंगा। भारत एवं भारतीयता इसका अनुपम उदाहरण है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत एवं भारतीयता की अनुपम झलक हाल में ही भारत में संपन्न जी–20 के शिखर सम्मेलन में देखने को मिलती है, जो लोकल से ग्लोबल के आदर्श पर स्थापित, वसुधैव कुटुम्बकम् के भाव से ओतप्रोत 'वन अर्थ वन फैमिली' वन फ्यूचर के भाव की सिद्धि में यह सम्मेलन मील का पत्थर साबित हुआ। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास का मंत्र मानवता के लिए एक उज्जवल मार्गदर्शिका बन गया। भारत के प्रयासों से ही अफ्रीकी संघ को जी–20 की स्थायी सदस्यता मिल सकी। इस प्रकार की सर्व समावेशी भावना केवल भारतीयता के कारण ही सम्भव है। जी–20 शिखर सम्मेलन में भारतीयता का गौरवपूर्ण प्रदर्शन इस बात का संकेत है कि देश की समृद्ध विरासत को पुरानी पहचान दिलाने की कवायत तेज है। कोणार्क सूर्य मंदिर के चक्र के सम्मुख स्वागत रात्रि भोज के समय स्वागत हेतु नालंदा की प्रतिकृति का वैभवशाली प्रदर्शन पारंपरिक भोजन एवं परिधान साड़ी में राष्ट्राध्यक्षो की पत्नियों का भारत मंडपम में आगमन आधुनिक भारत एवं भारतीयता को प्रस्तुत करता है। वैभवशाली विरासत एवं प्राकृतिक सौन्दर्य की विलक्षणता को ध्यान में रखकर ही श्रद्धेय बाजपेयी जी ने उचित ही व्यक्त किया है–

भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्र पुरुष है, हिमालय मस्तक है कश्मीर कीरीट है पंजाब और बंगाल दो कंधे, पूर्वी और पश्चिमी घाट दो विशाल जंघायें है, कन्याकुमारी इसके चरण हैं, सागर इसके पग पखारता है।

यह चंदन की भूमि है, अभिनंदन की भूमि है यह तर्पण की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है, इसका कंकड़–कंकड़ शंकर हैं, इसका बिन्दु–बिन्दु गंगाजल है, हम जिएंगे तो इसके लिए, मरेंगे तो इसके लिए। कण–कण में विशालता का दर्शन और जन्म से मरण पर्यन्त 'हम' का समर्पण भाव ही भारत एवं भारतीयता को अभिव्यक्त करता है। जय भारत–भारती।

सन्दर्भ –

1. विष्णु पुराण – 2.3.1, उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिण वर्षं तद भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।
2. विष्णु पुराण – 2.3.24, गायन्ति देवाः किल गीतिकानि धन्यास्तु ते भारतभूमि भागे स्वर्गा पवर्गास्पद हेतुभूत भविन्त भूयः पुरूषः सुरत्वात्।
3. श्रीमद्भागवत पुराण –5, 19, 21, अहो अमीषां कि कारि शोभनं प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः। यैर्जन्म जन्म लब्धं नृष भारताजिरे मुकुण्द सेवौपायिका स्पृहा हि नंः।
4. अथर्ववेद–12.1.12, पृथ्वी सूक्त, माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिब्याः, पृथ्वी पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तः।
5. यह भूमि मेरी माता है और मैं सब इसके पुत्र हैं। पर्जन्य अर्थात मेघ हमारे पिता हैं। ये दोनों मिलकर मेरा पालन (पिपर्तु) करते हैं।
6. Eggermount, Pierre Herman Leonard (1975), Alexanders combaigns in sind and Baluchistan and the siege of Brahman Town of Hermatilia, ISBN - 978-96-6186-037-2. Damdamdev A Political History of the Achaemendid Empire (1989) ISBN - 978-90-04-09172-6
7- Yarshater Ehsan, Encyclopedia Iranica (English) Routledge and kegar Paul. ISBN - 978-0-933-273-95-5 & Livius (www.livius.org) susa stalue of Darius.
8- Roy, Anirudha. The Varied facets of History : Essays in Honour of Anirudha Roy. (English) Primus Books, ISBN - 978-93-80607-16-0.
9 Mukherjee, B.N., The Foreign Names of the Indian sub Continent, Place and name socity of India 1989 & Ra, Nihar Rajan, Brajalal, A source book of Indian Civilization (English) Orient Black Swan ISBN - 978-81-250-1871-1.
10. श्रीमद् भागवत महापुराण, 11वां स्कंध, अध्याय–2
11. विष्णु पुराण – 2.1.31
12. वायु पुराण – 33.52
13. लिंग पुराण – 1.47.23
14. ब्रह्माण्ड पुराण – 14.5.62
15. अग्नि पुराण – 107.11–12
16. माण्र्कडेय पुराण – 50.41
17- Jha, D. N. Rethinking Hindu Identity Page No. 214 & Singh Upendra Political Violence in Ancient day Page No. 253.
18. बृहदारण्यक उपनिषद–सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुखभाग भवेत।।
19. तैत्तिरीयोपनिषद – शिक्षावली, 1.11.2